①

Lecture No:- 35.

Topic,

Online class.
Date, 7-5-2020
Time - 10:10 to 10:50 A-M

Dr Surita Kumari
Depart. of philosophy,
B.A Part - I (S)
A.N.D. College Shahpur
Patory, Samastipur,

① Sources.

(i) Ans:- प्रमाण (Sources of Knowledge)
प्रमाता और प्रमेय, के रहने के बावजूद ज्ञान तब तक नहीं हो सकता जब तक ज्ञान का कोई साधन नहीं हो। ज्ञान के साधन को प्रमाण कहते हैं।

हमने आरंभ में ही देखा है कि न्याय के अनुसार ज्ञान के साधन (विचार) चार हैं। जिसमें प्रत्यक्ष भी एक है। प्रत्यक्ष पर विचार करने के पूर्व संक्षेप में ज्ञान के स्वरूप पर विचार करना अपेक्षित होगा। न्याय को प्रमाणशास्त्र (Epistemology) में विशिष्ट स्थान प्राप्त है।

न्याय दर्शन में ज्ञान को बुद्धि (और उपलब्धि) (Cognition), उपलब्धि (Apprehension) का

P.T.O.

प्रमाति माना गया है। वस्तुतः ज्ञान यहाँ और उपलब्धि के अर्थ में प्रयुक्त किये गये हैं।

ज्ञान का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है:- व्यापक अर्थ में और संकुचित अर्थ में व्यापक अर्थ में यह यथार्थ यथार्थ और अयथार्थ ज्ञान का सूचक है। इसे उदाहरण से समझा जा सकता है। रात्रि के समय एक व्यक्ति रस्सी को देखकर रस्सी समझता है। और दूसरा दूसरा रस्सी को देखकर साँप समझता है।

यद्यपि यहाँ ज्ञान दोनों को हो रहा है। फिर भी दोनों के ज्ञान में इसलिए अंतर है कि एक को यथार्थ ज्ञान हो रहा है। और अयथार्थ ज्ञान के रूप में होता है। परन्तु इसके विपरीत संकुचित अर्थ में ज्ञान यथार्थ ज्ञान का ही एकमात्र बोधक होता है। न्याय दर्शन में ज्ञान। शब्द का

P.T.O.

प्रयोग व्यापक अर्थ में ही हुआ है।

न्याय दर्शन में अपना विचार अपने ढंग से किया है। न्याय दर्शन में ज्ञान का स्वरूप प्रकाशमय माना गया है। ज्ञान का स्वरूप है। किसी वस्तु को प्रकाशित करना। जिस प्रकार दीपक समीपस्थ वस्तु को प्रकाशित करता है, उसी प्रकार ज्ञान भी वस्तु को प्रकाशित करता है। तर्क कौमुदी में कहा गया है।

"अर्थ प्रकाशो बुद्धि:"

वस्तु के प्रकाश में ही ज्ञान निहित है। यहाँ पर (यह) यानी कहना अप्रासंगिक नहीं होगा कि यह वस्तु प्रकाशन यथार्थ और अयथार्थ दोनों ज्ञान में हो सकता है।

उपरोक्त विवेचन से यह प्रमाणित होता है कि ज्ञान का अर्थ कार्य ध्येय वस्तुओं को प्रकाशित करना है।

ज्ञान के सम्बन्ध में दूसरा उल्लेखनीय तथ्य यह है कि ज्ञान हमारे कार्य का आधार है।

END